12 ऐतिहासिक भवन-वनपर्ति किला
(Historicalsites – Wanaparti Fort)

12.1.चित्र देखिए। सोंचकर बताइए।

गोलकोंडा किला- हैदराबाद

ओरगोल्लू किला- वरंगल

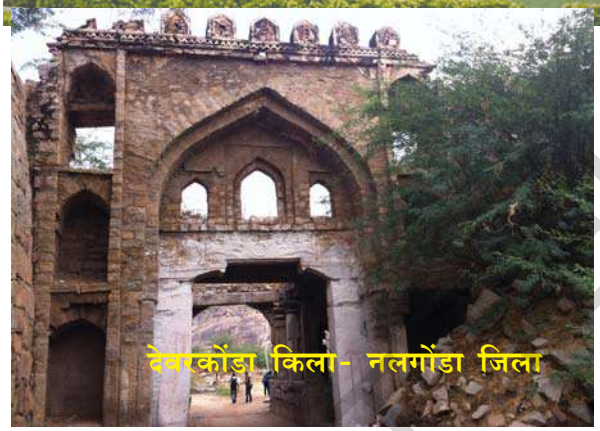
देवरकोंडा किला- नलगोंडा जिला

दोम्मकोंडा, कामारेड्डी जिला

भुवनगिरी किला- यादादरी जिला

रामगिरी किला पेद्दापल्ली जिला

- क्या आप जानते हो कि चित्रों में क्या है? वह कहाँ है? आपके जिलों में ये हैं क्या ?
- इनको देखने पर तुम्हें कैसा लगता है। इन चित्रों को क्या तुमने कभी देखा है?
- इन्हें देखने से या इनके बारे में पढने से हमें किन विषयों का पता चलता है?
- हमारे प्रांत के मानचित्र में ऊपरवाले चित्र कहाँ है? पहचानिए।

12.2. वनपर्ति का किला

हमारा आवासीय घर, वेश-भूषा, खान-पान, आचार-विचार आदि हमारी संस्कृति को दर्शाते हैं। अब हम जिन सुविधाओं का उपयोग कर रहे हैं, वे पहले नहीं थे। उसी तरह आने वाले समय में अनेक परिवर्तन होंगे। बीते हुए काल की घटनाएँ, विशेषताएँ जानना बहुत ही उत्सुकतापूर्वक होती हैं। इसी को इतिहास कहते हैं। प्राचीन काल में निर्मित भवन, शिलालेख और उस समय लिखे गए ग्रंथ हमको उस समय की जानकारी देते हैं।

हमारे तेलंगाना राज्य के इतिहास के आधार स्वरूप कई किले हैं। वरंगल, गद्वाल, गोलकोंडा, राचकोंडा, देवरकोंडा, भुवनगिरी, दोमकोंडा, वनपर्ति आदि किले प्रसिद्ध हैं। उस समय के राजा शत्रुओं से रक्षा के लिए, प्राप्त विजयों के स्मारक स्वरूप किलों का निर्माण करते थे। ये आज हज़ारों वर्ष के इतिहास के साक्षी हैं। बीते ज़माने में हमारे शासक और उनके द्वारा बनाए गए भवनों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे?

इकट्ठा करें

- आपके गाँव को वह नाम कैसा आया बड़ों से पूछकर जानिए।
- आपके अडोस-पडोस के ऐतिहासिक भवनों के नाम लिखिए।

12.3. वनपर्ति का किला - इतिहास

जो चित्र में दिखाई दे रहा है वही वनपर्ति का किला है। यह हमारे राज्य के वनपर्ती जिले में है। वनपर्ति हैदराबाद से 150 कि.मी. की दूरी पर है। पहले ज़माने में यहाँ वन अधिक थे इसीलीए इस प्रांत को नाम वनपर्ति पड़ा।

कौन सा किला कहाँ है? किसने बनवाया?

किला	जिला	जिसने बनाया
वरंगल (ओरुगल्लु)	वरंगल	काकतीय राजा
गद्वाल	जोगुलांबा	सोमनाद्रि
गोलकोंडा	हैदराबाद	कुलीकुतुबशाह
राचकोंडा	नलगोंडा	रेचर्लसिंगमनायक
दोमकोंडा	कामारेड्डी	कामिनेनि वंशीय
भुवनगिरी	यादाद्री, भुवनगिरि	त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य
देवरकोंडा	नलगोंडा	रेचर्ल पद्मनायक
खम्मम किला	खम्मम	काकतीय राजा
मेदक किला	मेदक	प्रतापरुद्र
फ़लकनुमा	हैदराबाद	सर विखार उल उमरा

SCERT TELANGANA

वनपर्ति संस्थान के मूल पुरुष जनुम वीरकृष्णा रेड्डी थे। पहले ये 1510 ई में पातपल्ली में रहते थे। बाद में पातपल्ली के करीब सूगूर में किला बनाकर, अपना निवास स्थान सूगूर को बदला। तब से उसका नाम सूगूर संस्थान कहलाने लगा। वह संस्थान एक अधीनस्थ राज्य के रूप में गोलकोंडा सुल्तानों के आधीन था। उस समय सुल्तान कुली कुतुबशाह गोलकोंडा पर शासन कर रहा था। उस संस्थानाधीशों को 'रेड्डी राजुलु' कहकर बुलाया जाता था।

पातपल्ली में प्रारंभ हुई इस संस्थान की राजधानी सूगूर को : सूगूर से पेद्दजनम पेट को, बाद में कोत्तकोटा को वहाँ से श्रीरंगापुर स्थानांतरित हुई। रेड्डी राजाओं में से एक रामाकृष्णाराव ने 1807 ई में श्रीरंगापुरम से राजधानी को वनपर्ति में स्थानांतरित किया। तब से यह संस्थान भारत संघ में शामिल होने तक वनपर्ति राजधानी से ही शासन कर रहा था।

वनपर्ति संस्थान की राजधानियाँ

पातपल्ली
↓
सूगूर
↓
पेद्दजनं पेट
↓
कोत्तकोट
↓
श्रीरंगापुरम
↓
वनपर्ति

सोचिए, बताइए

- पहले जमाने में राजालोग अपनी राजधानी एक जगह से दूसरी जगह पर क्यों बदलते थे ?
- किले का निर्माण करके कितना समय हुआ होगा, हिसाब कीजिए।

वनपर्ति संस्थान पर 1510 ई से 1948 ई तक 15 पीढ़ियों के राजाओं ने शासन किया। पंद्रह पीढ़ियों में सत्रह राजाओं ने और छह रानियों ने शासन किया।

इस संस्थान के राजाओं ने कृषि विकास के लिए बहुत प्रयत्न किये हैं। संस्थान के विभिन्न गाँवों में सात बड़े तालाब खुदवाए। इन्हें सप्त समुद्र के नाम से बुलाया जाता है। हजारों एकड़ जमीन की सिंचाई की व्यवस्था की गई। इन तालाबों से गाँवों में पीने के पानी जरूरत पूरी होती थी।

क्या आप जानते हैं!

- भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल ने सभी संस्थानों को भारत संघ में मिला लिया। हमारे राज्य में जो छोटे-छोटे संस्थान थे वो सब भारत संघ में मिल गये।
- देश में सबसे अंत में निज़ाम संस्थान भारत संघ में मिल गया।

सप्त समुद्र

1.	शंकर समुद्र	-	कानायपल्ली
2.	रंग समुद्र	-	श्रीरंगपुरम
3.	वीर समुद्र	-	ताटिपामुल
4.	महाभूपाल समुद्र	-	पेब्बेरु
5.	कृष्णा समुद्र	-	संकिरेड्डि पल्ली
6.	गोपाल समुद्र	-	वेलटूरू
7.	रामसमुद्र	-	राइन पेट

SCERT TELANGANA

सोचिए, बताइए

- इन्हें सप्त समुद्र क्यों कहा जाता था कक्षा में चर्चा कीजिए।

क्या आप जानते हैं!

- वनपर्ति संस्थानाधीशों में एक राजा रामेश्वरराव ने अपनी माता सरलादेवी के नाम पर सरला सागर का निर्माण करवाया। इसकी विशेषता यह है कि तालाब के भरते ही द्वार अपने आप खुल जाते हैं। इसी को सैफ़ान पद्धति कहते हैं। इस तरह के तकनीकी ज्ञान से बनाए गए तालाबों में यह समूचे एशिया महाद्वीप में प्रसिद्धि पाई।

12.4. कलाएँ

रेड्डी शासक कलाओं में रुचि रखनेवाले थे। इनके द्वारा बनाए गए भवनों की दीवारों पर, छत के ऊपरी भागों पर रंगों से अनेक प्रकार की आकृतियाँ बनाई गई। वे आज भी सुरक्षित है। जर्मनी से सामग्री लाकर, कलाकारों का बुलवाकर इन्हें बनवाया गया। वे उस समय की कला वैभव का प्रतीक माने जाते हैं। इन्होंने संगीत, नृत्य और हस्त कलाओं को भी प्रोत्साहन दिया।

सोचिए, बताइए

- ऊपरी छत देखे हैं ना! इन छतों में और हमारे घरों के छतों में क्या अंतर है?
- पहले पृष्ठ में चित्र देखिए, निर्माण कैसा है?
- इनके निर्माण में किसका उपयोग ज्यादा हुआ है?
- यह क्यों प्रयोग किये होंगें?

SCERT TELANGANA

सोचिए, बोलिए

- किले की दीवारों के बीच बुर्जों का निर्माण क्यों हुआ? सोचिए।
- बुर्जों में जगह-जगह छेद क्यों है?
- किले की दीवार से क्या लाभ है?

12.5. मंदिर

वनपर्ति के राजाओं ने अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। उनमें बहिरि गोपालराव ने तिरुपति, कांची और श्रीरंगपट्नम के मंदिरों का दर्शन करके, श्रीरंगापुरम में श्रीरंगनायक स्वामि मंदिर का निर्माण करवाया। यह अद्भुत शिल्प कला का उदाहरण है। यह मंदिर उत्तर श्रीरंग क्षेत्र के नाम से जाना जाता है।

श्रीरंगनायक स्वामी मंदिर

सोचिए, बोलिए

- दर्शनीय स्थान, प्राचीन स्मारकों के पास जब हम जाते हैं, कौन से काम नहीं करने चाहिए।
- उस समय के प्राचीन स्मारकों की महानता क्या है?

SCERT TELANGANA

ऐसा कीजिए

- यदि आप किसी भवन या देवालय देखते हैं, वहाँ दीवारों और छतों पर रहने वाले चित्रों का निरीक्षण कीजिए।
- उन स्मारकों का निर्माण किसने करवाया? उन कलारूपों को क्या कहते हैं? जानकारी प्राप्त करें।

सोचिए, बोलिए

- प्राचीन मंदिरों की क्या महानता है?
- प्राचीन मंदिरों और आजकल की मंदिरों में क्या अंतर है?
- कुछ प्राचीन मंदिर शिथिल अवस्था में हैं ना! ऐसा क्यों है? इन्हें हम कैसे बचा सकते हैं।

12.6. साहित्य सेवा

रेड्डी राजाओं में बहिरि गोपालराव आठ भाषाओं में पारंगत थे, इसलिए उन्हें ''अष्टभाषा कोविद'' कहा जाता था। इस संस्थान के शासक अनेक साहित्यकारों को आश्रय देते थे, और स्वयं भी कवि थे। वनपर्ति संस्थान के पावुरम रंगाचार्युलु ने सौ से अधिक ग्रंथों की रचना की है। इन्होंने तिरुपति वेंकट कवियों के साथ साहित्य गोष्ठियों में भाग लिया। भ्रमरांबिका संवाद के लेखक कडुकुंट्ल पापशास्त्री, श्रीकृष्ण चरित्र संग्रह, काव्य गुच्छम, ग्रंथों के लेखक अनुमुल वेंकट सुब्रह्मण्य शास्त्री वनपर्ति संस्थान के प्रसिद्ध कवि थे।

12.7. प्रशासन

इनके संस्थान में भूमि का मापन करके, उसके अनुसार भूमिकर निर्धारित होता था। इन्होंने संस्थान को तीन भागों में विभाजित किया। वह है : १) सूगूर प्रांत २) वनपर्ति प्रांत ३) केशमपेट प्रांत। इन शासकों के पास बलशाली सेना थी। निज़ाम राज्य के दक्षिणी सीमाओं की यह सेना रक्षा करती थी।

क्या आप जानते हैं!

- **सूगूर सिक्के :** निज़ाम राजा सिकिंदर शाह ने रामकृष्णा राव को स्वतंत्र सिक्के बनाने की अनुमति दी। यह सिक्के वनपर्ति संस्थान के अतिरिक्त निज़ाम राज्य में भी प्रचलित होते थे। इनका नाम सूगूर सिक्के पड़ा।

SCERT TELANGANA

मुख्य शब्द

भवन	कर	बुर्ज
किला	गुंबद	मंडप
संस्थान	तालाब	सूगूर सिक्का
समुद्र	इतिहास	हस्त कला

हमने क्या सीखा ?

1. विषय की समझ

अ) वनपर्ति किले को वह नाम कैसे पड़ा ?

आ) सप्त समुद्र किसे कहते हैं ?

इ) वनपर्ति संस्थान के जमीनों का वर्गीकरण कीजिए?

ई) वनपर्ति शासकों की साहित्य सेवा का वर्णन कीजिए?

उ) किलों का निर्माण किसलिए किया गया ?

2. प्रश्न करना-अनुमान लगाना

- लता गोलकोंडा किला देखने के लिए अपने मामा के साथ गई थी। गोलकोंडा किले के बारे में जानने के लिए लता कौन-कौन से प्रश्न पूछी होगी?

3. प्रायोगिक कार्य-क्षेत्र निरीक्षण

अ) आप के निकटस्थ किसी भवन या प्राचीन मंदिर के पास जाइए। वहाँ क्या-क्या है देखकर लिखिए।

आ) मंदिरों के पास, प्राचीन इमारतों के पास पुरातत्व विभाग को एक सूचना पटल होता है। उस पर क्या-क्या लिखा रहता है। देखकर बताइए।

4. समाचार संकलन-परियोजना कार्य

- आपके जिले में जो प्राचीन भवनों या किलों की जानकारी इकट्ठा कीजिए। उस जानकारी से तालिका तैयार कीजिए।

SCERT TELANGANA

5. चित्रांकन, मानचित्र कौशल, नमूना द्वारा भाव विस्तार

अ) भवन की छत का चित्र खींचिए।

आ) तेलंगाना के मानचित्र में महबूबनगर, वनपर्ति दर्शाएँ।

इ) मिट्टी से किसी किले का नमूना तैयार कीजिए।

ई) पाठ के आरंभ में किले देखे हैं ना! वे किन-किन जिलों में हैं तेलंगाना में मानचित्र में दर्शाएँ।

6. प्रशंसा, मूल्य, जैव विविधता संबंधी जागरूकता

अ) वनपर्ति किले में आपको क्या अच्छा लगा? क्यों?

आ) किले के निर्माण में कई लोगों का श्रम छिपा है। उनके श्रम की प्रशंसा में कुछ लिखिए।

इ) ऐतिहासिक भवनों का संरक्षण आवश्यक है। चर्चा कीजिए। क्यों?

ई) आप जब ऐतिहासिक भवनों को देखते हैं तब किन विषयों को महत्व देते हैं?

उ) प्राचनी इमारतों की कैसे रक्षा करें?

ऊ) किलों के निर्माण में किस सामग्री का उपयोग हुआ? वह कहाँ उपलब्ध होती है?

क्या मैं यह कर सकता हूँ?

1.	प्राचीन भवनों, किलो की महत्व बता सकता हूँ।	हाँ/नहीं
2.	प्राचीन भवनों के बारे में जानने के लिए प्रश्न कर सकता हूँ।	हाँ/नहीं
3.	प्राचीन भवनों की जानकारी प्राप्त करके तालिका बना सकता हूँ।	हाँ/नहीं
4.	प्राचीन भवन वाले प्रांतों को तेलंगाना के मानचित्र में दर्शा सकता हूँ।	हाँ/नहीं
5.	प्राचीन भवनों के चित्र उतारकर नमूना बना सकता हूँ।	हाँ/नहीं
6.	प्राचीन भवनों के संरक्षण की आवश्यकता का वर्णन कर सकता हूँ।	हाँ/नहीं

SCERT TELANGANA